ज्योतिषशास्त्र की साझी संस्कृति परम्परा के रहनुमा अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना

प्रो.(डॉ.) उमाशंकर

आचार्य(ज्योतिष), संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

डॉ. राजीव रंजन

सहायक आचार्य(ज्योतिष),संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007.

शोधसारांश

प्राच्य भारतीय ज्ञानपरम्परा का वैशिष्ट्य इसकी समन्वयात्मक दृष्टि में ही समाहित है। ज्योतिषशास्त्र भी इस श्रेष्ठ परम्परा का अपवाद नहीं है,अपितु वैदिक, पाराशरी, यवन, ताजिक तथा इस्लामी-ज्योतिषीय ग्रंथों तथा उनके रचनाकारों ने इस समन्वयवादी चेतना का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है, जहाँ विभिन्न ज्योतिषीय परम्पराओं का स्पष्ट परस्पर आदान-प्रदान दृष्टिगत होता है। जिसमें अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना ने मध्यकालीन भारत के मुगलकाल में इस सांस्कृतिक समन्वय को विशेष रूप से विकसित करने में विशिष्ट व अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। सामान्य रूप से रहीम कवि या अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना को उनके दोहों के लिए हिन्दी साहित्य में स्मरण किया जाता रहा है, परन्तु संस्कृत-फारसी-उर्दू-हिंदी भाषा की बौद्धिक व वैज्ञानिक परम्परा तथा सांस्कृतिक समन्वय के साथ ज्योतिषशास्त्र के क्षेत्र में उनके योगदान पर अपेक्षाकृत कम चर्चा हुई है। फलित ज्योतिषशास्त्रीय योगों पर आधारित रहीमकृत रचना 'खेटकौतुकम् ' को भारतीय ज्योतिषशास्त्र की साझी संस्कृति और विरासत का अद्भुत एवं अद्वितीय दस्तावेज माना जा सकता है। 'खेटकौतुकम् ' ग्रन्थ में तुर्की, उर्दू-फारसी-अरबी पारिभाषिक शब्दावली, संस्कृत और हिन्दी भाषा में भारतीय फलित-ज्योतिषशास्त्रीय सिद्धांतों तथा ताजिक पद्धति के सिद्धान्तों का ऐसा समन्वय मिलता है, जो भारतीय सांस्कृतिक बहुलता की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति का जीवन्त उदाहरण सिद्ध होता है। प्रस्तुत शोधपत्र में 'खेटकौतुकम् ' ग्रन्थ के आधार पर अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना के हिन्दू-मुस्लिम बौद्धिक सहअस्तित्व, भाषिक समन्वय, सांस्कृतिक दृष्टि, तथा ज्योतिषीय योगदान के आलोक में भारतीय साझी संस्कृति के निर्माण के सन्दर्भ में उनकी भूमिका का विश्लेषण प्रस्तावित है। इस अध्ययन में उच्चस्तरीय ऐतिहासिक अध्ययन, तुलनात्मक समालोचना तथा पाठालोचनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना सेनानायक और कवि होने के साथ-साथ भारतीय ज्ञानपरम्परा के ऐसे सेतु-निर्माता थे जिन्होंने ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान को विभिन्न भाषाओँ और संस्कृतियों के मध्य संवाद के साधन के रूप में स्थापित किया था । भारतीय बहुलतावादी परम्परा में सांस्कृतिक सहअस्तित्व और

बौद्धिक समन्वय के ग्रन्थरत्न के रूप में खेटकौतुकम्' अद्यावधि पर्यंत प्रेरणास्त्रोत के रूप स्थापित व सम्मानित है।

प्रमुख शब्द- फलित-ज्योतिष, ताजिकशास्त्र, भारतीय ज्योतिर्विज्ञान,राजयोग, दुर्योग, अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना, खेटकौतुकम्, साझी संस्कृति, भाषिकसमन्वय, मुगलकालीन अध्ययन परम्परा ।

भारतीय संस्कृति सदैव सर्वविध समन्वय पर आधारित रही है। वैदिक काल से ही यहाँ की संस्कृति विविध धार्मिक, भाषिक एवं दार्शनिक चिंतन धाराओं में परस्पर विरोध होने पर भी सहअस्तित्व की भावना का मार्ग प्रशस्त करती रही है -

'सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते । ।'

यही कारण है कि भारत में ज्ञान की प्रत्येक शाखा चाहे वह चिकित्सा हो, साहित्य हो,दर्शन हो अथवा ज्योतिष हो ये सभी अनेक तात्कालिक या दीर्घकालिककारणों से बहुसांस्कृतिक आदान-प्रदान का माध्यम बनीं । इन सब में से भी ज्योतिषशास्त्र विशेष रूप से ज्ञान-विज्ञान का ऐसा क्षेत्र रहा, जहाँ भारतीय, यूनानी, फारसी,अरबी तथा ताजिक परम्पराओं का अद्भुत सैद्धान्तिक तथा भाषिक समागम हुआ। मध्यकालीन भारत में विभिन्न आक्रमणों तथा सांस्कृतिक प्रभाव के कारण ताजिक ज्योतिष के माध्यम से इस सांस्कृतिक तथा शास्त्रीय समन्वय को एक नया आयाम प्राप्त हुआ । ताजिक प्रणाली मूलतः ताजिकिस्तानी- अरबी-फारसी मिश्रित ज्योतिषीय परम्परा से सम्बद्ध थी, जिसे भारतीय विद्वानों ने अपने मौलिक शास्त्रीय सिद्धांतों को अक्षुण्णरखते हुए संस्कृत भाषा में निबद्ध ग्रंथों में रूपान्तरित कर आत्मसात कर लिया । ताजिक पद्धति के सन्दर्भ में आचार्य नीलकंठ और उनकी रचना ताजिक-नीलकण्ठी का योगदान सर्वोपरि रहा है। इस परम्परा के निर्वहन में संस्कृत विद्वानों के साथ-साथ मुस्लिम विद्वानों ने भी कंधे से कन्धा मिलकर अपनी-अपनी भूमिका निभायी है। इन्हीं मुस्लिम विद्वानों की शृङ्खला में अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना का नाम अत्यन्त सम्मान के साथ लिया जाता है।

सामान्यतया अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना या रहीम कवि की प्रसिद्धि उनके नीतिपरक दोहों के कारण ही मानी जाती रही है , परन्तु वे तुर्की,संस्कृत, अरबी फारसी एवं ज्योतिषशास्त्र की विभिन्न शाखाओं व परम्पराओं के गम्भीर अध्येता और विद्वान भी थे। भारतीय फलित ज्योतिषीय परम्परा में उनका ग्रन्थ 'खेटकौतुकम् ' एक अप्रतिम रचना है

-''करोम्यब्दुर्रहीमोऽहं खुदाताला प्रसादतः ।
पारसीयपदैर्युक्तं खेटकौतुकजातकम् ।''

इस ग्रन्थ में फारसी एवं अरबी पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग, संस्कृत छन्दों के अन्तर्गत किया गया है,जो सांस्कृतिक समन्वय का परिचायक और भाषिक प्रयोगधर्मिता का उत्कृष्ट उदाहरण है। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य खेटकौतुकम् ग्रन्थरत्न के आलोक में अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना का ''ज्योतिषशास्त्र की साझी संस्कृति के रहनुमा'' के रूप में यथार्थ मूल्यांकन करना है।

शोध की पद्धति एवं उद्देश्य

इस शोधपत्र में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक-विश्लेषणात्मक, पाठालोचनात्मक तथा तुलनात्मक पद्धतियों का आश्रय लेते हुए रहीम कवि के सांस्कृतिक समन्वयवादी दृष्टिकोण का विश्लेषण,संस्कृत एवं फारसी ज्ञानपरम्परा के अन्तर्सम्बन्धों का रेखांकन, भारतीय साझी संस्कृति के निर्माण में रहीम की भूमिका का मूल्यांकन तथा खेटकौतुकम् की ज्योतिषीय विशेषताओं के अध्ययन सदृश उद्देश्यों को केंद्र में रखा गया है।

अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

ऐतिहासिक साक्ष्यों के आलोक में अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना का काल 1556 ई-1627ई. है। उनकी गणना मुगल शासक अकबर के नवरत्नों में की जाती थी । उनके पिता बैरम ख़ाँ अकबर के संरक्षक थे,जिनकी मृत्यु(हत्या) रहीम की बाल्यावस्था(3-4 वर्ष) में ही हो गई थी । यद्यपि अकबर अन्य प्रशासनिक दायित्वों के कारण शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाया था,परन्तु उसने रहीम के शिक्षा और सैन्य प्रशिक्षण की अत्यन्त उच्च कोटि की व्यवस्था की थी । पितृ परंपरा से तुर्क होने के कारण तुर्की भाषा तथा तत्कालीन उच्च शिक्षा का माध्यम अरबी- फारसी भाषा होने के कारण इन भाषाओं में रहीम की सहज गति थी। परन्तु विद्या-व्यसनी , बहुपठित,बहुश्रुत तथा भ्रमणशील प्रवृत्ति के होने के कारण इन्हें उर्दू,हिन्दी,अवधी ,ब्रजभाषा आदि भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान था । भारतवर्ष की प्राचीनतम और ज्ञान-विज्ञान की भाषा संस्कृत का उन्होंने गंभीर अध्ययन किया था। तत्कालीन भारतीय भाषाओं के साथ-साथ कुछ यूरोपीय भाषाओं यथा-अंग्रेजी, फ्रेंच, पुर्तगाली आदि पर भी उनका समान अधिकार था। अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना के व्यक्तित्व को भारतीय सांस्कृतिक समन्वय का जीवित उदाहरण माना जा सकता है। यद्यपि उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि इस्लाम से सम्बद्ध थी तथापि भारतीय धर्म, दर्शन एवं ज्योतिष सदृश भारतीय ज्ञान-परम्परा में वे गहरी आस्था रखते थे। उनके रहीम के दोहों में जहाँ भारतीय धर्म,दर्शन,भक्तिपौराणिक आख्यानों एवं नीति का समन्वय प्रकट होता है, वहीं उनकी अद्वितीय कृति 'खेटकौतुकम्' में तत्कालीन भारतवर्ष में प्रचलित विविध भाषाओं,भारतीय वैज्ञानिक ज्ञान-विज्ञान,खगोलशास्त्र एवं ज्योतिषशास्त्रीय सैद्धांतिक दृष्टि का अद्वितीय और अपूर्व समन्वय प्राप्त होता है रहीम

ने अपनी कूटनीतिक,राजनीतिक और प्रशासनिक क्षमताओं द्वारा अनेक संस्कृत विद्वानों संरक्षण दिया । अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना अनेक भाषाओं के विद्वान तो थे ही और संस्कृत भाषा में उन्होंने विशेष निपुणता प्राप्त की थी,यही कारण है कि उन्होंने संस्कृत में काव्य एवं ज्योतिष सम्बन्धी रचनाएँ कीं। इस तथ्य से यह बात प्रमाणित होती है कि मुगलकाल को हम केवल राजनैतिक उथल-पुथल,अस्थिरता,युद्धों की बहुलता के काल-खण्डके रूप स्मरण नहीं कर सकते,अपितु इस युग को सांस्कृतिक एवं बौद्धिक संवाद का युग भी कहा जा सकता है ।

ज्योतिषशास्त्र की भारतीय परंपरा- वैदिक साहित्य को विश्व की प्राचीनतम एवं सर्वाधिक प्रामाणिक ज्ञानपरम्परा के रूप में मान्यता प्राप्त है। मानवकल्याण, दुःखनिवारण तथा इष्टसिद्धि के साधन के रूप में वेदों की उपयोगिता को प्राचीनकाल से स्वीकार किया जाता रहा है। 'इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः' यह पारम्परिक परिभाषा वेदों की लोकमंगलकारी भूमिका को उद्घाटित करती है। तथापि वैदिक संहिताओं की गूढ़ता, सांकेतिकता तथा रहस्यात्मक प्रकृति के कारण उनके यथार्थ अभिप्राय को समझना सदैव जटिल रहा। इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु वेदाङ्ग साहित्य का आविर्भाव हुआ, जिसे उपनिषदों में 'अपरा विद्या ' के अन्तर्गत स्थान प्रदान किया गया। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिष इन षड्वेदाङ्गों में ज्योतिषशास्त्र को विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ और 'ज्योतिषं वेदानां चक्षुः' कहकर इसे वेदपुरुष का नेत्र स्वीकार किया गया। प्रारम्भिक वैदिक युग में ज्योतिष का प्रमुख उद्देश्य यज्ञीय कर्मों के लिए शुभकाल, ऋतु एवं मुहूर्त का निर्धारण था, किन्तु ऋषियों की सतत चिन्तन-परम्परा ने इसे अत्यन्त व्यापक एवं वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया। फलतः यह सिद्धान्त, संहिता तथा होरा इन त्रिस्कन्धों में विकसित होकर भारतीय ज्ञानपरम्परा का महत्त्वपूर्ण शास्त्र बन गया। भारतीय दार्शनिक दृष्टि ज्ञान की दैवी उत्पत्ति को स्वीकार करती है; अतः ज्योतिषशास्त्र की परम्परा भी ब्रह्मा, सूर्य, वशिष्ठ, नारद, पराशर आदि महर्षियों से सम्बद्ध मानी गई। ऋषियों ने ज्योतिष को केवल ग्रहगति अथवा कालमापन तक सीमित न रखकर मानवजीवन की बहुआयामी आवश्यकताओं एवं सांस्कृतिक चेतना के मार्गदर्शक शास्त्र के रूप में प्रतिष्ठित किया।

ज्योतिषीय ज्ञान के अन्तरसांस्कृतिक आदान-प्रदान भारतीय ऋषियों ने ज्योतिषशास्त्र को केवल ग्रह-नक्षत्रों की गति अथवा काल-निर्णय का उपकरण न मानकर मानव-जीवन की समस्त आवश्यकताओं, आकांक्षाओं एवं लौकिक पारलौकिक कल्याण का मार्गदर्शक शास्त्र स्वीकार किया है। इसी सार्वभौमिक उपयोगिता के कारण यह विद्या भारतीय ज्ञान-परम्परा की सीमाओं का अतिक्रमण कर विविध देशों, भाषाओं एवं संस्कृतियों में व्यापक रूप से प्रतिष्ठित हुई। भारतीय मनीषियों के साथ-साथ यवन, पारसी तथा अरब विद्वानों ने भी

ज्योतिर्विज्ञान के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। वराहमिहिर ने अपनी कालजयी कृति बृहत्संहिता में "म्लेच्छा हि यवनाः ..." कहकर यवनाचार्यों की विद्वत्ता को सम्मानित किया है, जिससे स्पष्ट होता है कि ज्योतिषीय ज्ञान के अन्तरसांस्कृतिक आदान-प्रदान को भारतीय परम्परा ने सहर्ष स्वीकार किया।

कल्याणवर्मा द्वारा रचित सारावली में राशियों के लिए प्रयुक्त 'ताबुरू', 'जितुम', 'कुलीर' आदि संज्ञाएँ यवन भाषिक प्रभाव की द्योतक हैं। इसी प्रकार ताजिकशास्त्र एवं रमलशास्त्र जैसी शाखाओं में पारसी एवं अरब परम्पराओं का गहन प्रभाव दृष्टिगत होता है। 'इक्कबाल' , 'इत्थशाल', 'कम्बूल' अथवा 'लह्यान' , 'हुमरा', 'नुस्त्रुतुल्खारिज' जैसी संज्ञाएँ इस सांस्कृतिक समन्वय की सशक्त प्रमाणिका हैं। वस्तुतः भारतीय ज्योतिषशास्त्र का विकास किसी एक संस्कृति की सीमाओं में आबद्ध न रहकर बहुसांस्कृतिक संवाद, बौद्धिक आदान-प्रदान तथा वैश्विक ज्ञान-संपर्क की प्रक्रिया के माध्यम से सम्पन्न हुआ, जिसने इसे सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक स्वरूप प्रदान किया।

खेटकौतुकम् : स्वरूप एवं विषयवस्तु

भारतीय ज्योतिषशास्त्रीय वाङ्मय की विकास-परम्परा में एक ऐसा महत्त्वपूर्ण चरण दृष्टिगोचर होता है, जब संस्कृत-प्रधान ग्रन्थरचना की पारम्परिक शैली से आगे बढ़कर बहुभाषिक अभिव्यक्ति की एक नवीन एवं स्वतंत्र पद्धति का उद्भव हुआ। प्रारम्भिक स्तर पर जहाँ संस्कृत ग्रन्थों में अन्य भाषाओं के शब्दों का सीमित एवं प्रसंगानुकूल प्रयोग मिलता है, वहीं उत्तरकाल में ऐसी शैली विकसित हुई जिसमें संस्कृत के साथ-साथ फारसी, अरबी तथा हिन्दी शब्दावली का समन्वित प्रयोग एक ही पद्य अथवा वाक्यरचना में स्वीकृत हो गया। यह प्रवृत्ति केवल भाषिक प्रयोगधर्मिता का परिचायक नहीं थी, अपितु तत्कालीन भारतीय समाज की सांस्कृतिक समन्वयशीलता तथा बौद्धिक उदारता का भी द्योतक थी। इस परम्परा का सर्वाधिक प्रतिनिधि एवं प्रामाणिक ज्योतिषग्रन्थ 'खेटकौतुकम्' माना जाता है, जिसके रचयिता के रूप में मुगलकालीन विद्वान एवं साहित्योपासक अब्दुर्रहीम खानखाना का नाम आदरपूर्वक स्मरण किया जाता है-

"जयति मधुरमूर्तिर्विश्वविख्यातकीर्तिः समरहतविपक्षःसर्वविद्यासु दक्षः ।
वितरणजितकर्णः पालिताशेषवर्णः सकलनृपतिहीरःखानखानाख्यवीरः "

रुद्रकवि-प्रणीत खानखानाचरित में उनकी विद्वत्ता, दानशीलता तथा बहुभाषिक दक्षता का अत्यन्त प्रशंसात्मक वर्णन प्राप्त होता है। 1556 1627 ई. के मध्य सक्रिय रहीम का युग भारतीय-फारसी सांस्कृतिक संवाद का उत्कर्षकाल था , जिसमें मिश्रित भाषिक शैली में ग्रन्थरचना का व्यापक प्रचलन हुआ। स्वयं रहीम ने भी पूर्ववर्ती पण्डितों द्वारा फारसी-

संस्कृत मिश्रित ग्रन्थों की परम्परा को स्वीकार करते हुए 'खेटकौतुकम्' की रचना की प्रेरणा का उल्लेख किया है। इसी परम्परा में आचार्य महादेवदेवकृत हिक्मत्प्रकाश भी भारतीय ज्ञानपरम्परा के सांस्कृतिक समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। अब्दुर्रहीम खानखाना विरचित 'खेटकौतुकम्' भारतीय फलित ज्योतिष परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण एवं विशिष्ट ग्रन्थ है, जिसमें जन्मकुण्डली के द्वादश भावों में स्थित ग्रहों के आधार पर जातक के जीवन में घटित होने वाले शुभाशुभ फलों का अत्यन्त सूक्ष्म विवेचन प्राप्त होता है। ग्रन्थकार ने केवल एकल ग्रहस्थितियों का ही नहीं, अपितु बहुग्रहयोगों के प्रभावों का भी गम्भीर विश्लेषण प्रस्तुत किया है। ग्रन्थ के मंगलाचरण ''करोम्यब्दुर्रहीमोऽहं खुदाताला प्रसादतः। पारसीयपदैर्युक्तं खेटकौतुकजातकम्॥'' से स्पष्ट होता है कि रहीम ने भारतीय ज्योतिषीय तत्त्वों को फारसी-अरबी भाषिक परम्परा के साथ समन्वित करने का अभिनव प्रयास किया। 'खेटकौतुकम्' की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता इसकी बहुभाषिक एवं मिश्रित शैली है। ग्रन्थ में कहीं विशुद्ध संस्कृत पद्य प्रयुक्त हुए हैं, तो कहीं हिन्दी, फारसी, अरबी एवं संस्कृत का अद्भुत सामंजस्य दृष्टिगोचर होता है ——

"यदा याफ़्तिख़ाने भवेत् शम्सखेटः, सुवेषो धनी वाहनाढ्यः सुशीलः।
सुयोषः शुभौकाः सिपाही सिलाही कविर्गीतगाने सुनेत्रोऽपि शिष्टः।''

जैसे पद्य इस भाषिक समन्वय की उत्कृष्टता को अभिव्यक्त करते हैं। इसी प्रकार राहु के चतुर्थ भावगत होने पर जातक के स्वभाव एवं जीवनगत क्लेशों का वर्णन करते हुए कवि ने ज्योतिषीय सिद्धान्तों को अत्यन्त व्यावहारिक एवं मनोवैज्ञानिक धरातल पर प्रस्तुत किया है। छन्द-विधान की दृष्टि से भी यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। रहीम ने संस्कृत के पारम्परिक छन्दों के साथ-साथ अरबी-फारसी छन्दशैली का भी सफल प्रयोग किया है, जो उनकी बहुभाषिक प्रतिभा, सांस्कृतिक समन्वयशीलता तथा ज्योतिषीय विद्वत्ता का सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करता है। अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना कृत खेटकौतुकम् भारतीय सांस्कृतिक समन्वय, भाषिक बहुलता तथा ज्योतिषीय परम्परा के अद्वितीय संगम का प्रतिनिधि ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में संस्कृत के पारम्परिक छन्दों के साथ-साथ अरबी-फारसी छन्दों विशेषतः 'बह्रे रमल मुसम्मन महजूफ़' एवं 'बह्रे मुतक़ारिब मुसम्मन महजूफ़' का अत्यन्त सशक्त एवं कलात्मक प्रयोग दृष्टिगोचर होता है, जो रहीम की बहुभाषिक प्रतिभा तथा छन्दशास्त्रीय प्रौढ़ता का प्रमाण प्रस्तुत करता है। ज्योतिषीय सिद्धान्तों को सहज, सरस एवं जनग्राह्य शैली में प्रस्तुत करने की उनकी क्षमता इस ग्रन्थ को विशिष्ट बनाती है।

"यदा मुश्तरी कर्कटे वा कमाने यदा चश्मखोरा जमीं वाऽऽसमाने।
तदा ज्योतिषी क्या लिखे क्या पढ़ेगा, हुआ बालका बादशाही करेगा।। ''

जैसे पद्य आज भी ज्योतिष-जगत् में अत्यन्त लोकप्रिय हैं और रहीम की काव्यात्मक अभिव्यक्ति एवं लोकस्वीकृति को रेखांकित करते हैं। यद्यपि ग्रन्थ की भाषा मूलतः संस्कृतप्रधान है, तथापि उसमें अरबी, फारसी तथा देशज शब्दावली का समन्वित प्रयोग तत्कालीन भारतीय समाज की बहुसांस्कृतिक संरचना को प्रतिबिम्बित करता है। मुगलकालीन भारत राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक संक्रमण के दौर से गुजर रहा था, जहाँ संस्कृत ज्ञान-विज्ञान की परम्परागत भाषा थी, वहीं फारसी एवं अरबी प्रशासनिक और दरबारी प्रतिष्ठा की भाषाएँ थीं। ऐसी परिस्थितियों में रहीम ने अपनी मिश्रित भाषाशैली के माध्यम से भाषायी एवं सांस्कृतिक विभेदों को पाटने का महत्वपूर्ण प्रयास किया। इस प्रकार खेटकौतुकम् केवल ज्योतिषग्रन्थ न होकर भारतीय सांस्कृतिक सहअस्तित्व, राष्ट्रीय चेतना एवं भाषिक समन्वय का जीवंत दस्तावेज सिद्ध होता है।यह मिश्रित शब्दावली भारतीय और इस्लामी ज्योतिषीय परम्पराओं के समन्वय को स्पष्ट करती है।

रहीम और साझी संस्कृति की अवधारणा

भारतीय संस्कृति में ''साझी संस्कृति'' का अर्थ है विविध धार्मिक,दार्शनिक एवं भाषिक समुदायों का सहअस्तित्व और ज्ञान व चिंतन का पारस्परिक विनिमय । इस्लामिक और भारतीय परम्पराओं के मध्य की साझी संस्कृति के सन्दर्भ में रहीम प्रमुख प्रतिनिधि व्यक्तित्व हैं। अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना की दृष्टि में ज्ञानया पर किसी एक समुदाय या सम्प्रदाय का एकाधिकार नहीं होता है,अपितु ज्ञान तो सम्पूर्ण मानवता की धरोहर है। यही कारण है कि उन्होंने संस्कृत ज्योतिष को अरबी-फारसी-उर्दू-तुर्की शब्दावली से समृद्ध किया और ताजिक परम्परा के शास्त्रीय सिद्धांतों को को भारतीय फलित ज्योतिष के सन्दर्भ में समन्वयात्मक शैली में प्रस्तुत किया ।रहीम के दोहों में भी यह समन्वयात्मक दृष्टिकोण परिलक्षित होता है।

"जो रहीम उत्तम प्रकृति,का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं ,लिपटे रहत भुजंग।। "

यह प्रेम और सहअस्तित्व की वही भावना है, जो खेटकौतुकम् में सांस्कृतिक समन्वय के रूप में व्यक्त होती है।

रहीम की दृष्टि ने धार्मिक कट्टरता को बौद्धिकताके स्थान पर हावी नहीं होने दिया और अपनी रचनाओं में उदारता के भाव को प्रधानता दी थी । वे भारतीय ज्ञान परम्परा के ऐसे प्रतिनिधिव्यक्तित्व हैं, जिन्होंने नितान्त भिन्न और परस्पर विरोधी पृष्ठभूमि से सम्बन्धित होते हुए भी संस्कृत ज्ञानपरम्परा को आत्मसात किया और बौद्धिकता में सम्वर्धन किया ।

भाषिक समन्वय : संस्कृत और फारसी का संगम

खेटकौतुकम् की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता इसकी भाषिक संरचना है। सामान्यतया संस्कृत के विद्वान् अपने ग्रन्थों में संस्कृत पारिभाषिक शब्दावली और भाषा का प्रयोग करते रहे हैं,परन्तु रहीम ने संस्कृत और अरबी छन्दों में फारसी,अरबी,संस्कृत,हिंदी,उर्दू,तुर्की शब्दावली के शब्दों का प्रयोग करएक नितान्त नवीन शैली विकसित की। उदाहरण-आफताबस्य पुत्रः ,केन्द्रखाने,माहताबस्य पुत्रः,मालखाने , मुश्तरी(अरबी) , चश्मकोरा(फारसी),बामुरौवतः ,दगलबाजश्च आदि। ये शब्द केवल भाषिक अलंकरण नहीं हैं, बल्कि तत्कालीन युग की बहुसांस्कृतिक चेतना के द्योतक हैं।रहीम ने अपनी रचनाओं द्वारा यह सिद्ध किया कि भाषा का उद्देश्य संवाद है, विभाजन नहीं। खेटकौतुकम् ग्रन्थ में संस्कृत,फारसी और अन्य भाषाओं का यह समन्वय भारतीय बहुलतावादी संस्कृति का उत्कृष्ट उदाहरण है।

मुगलकालीन बौद्धिक वातावरण और रहीम

ज्योतिषशास्त्र के ग्रन्थों के अरबी और फारसी अनुवाद की परम्परा आठवीं सदी से ही आरम्भ हो गई थी।इसी कालखण्ड में अरब के विद्वानों ने भारत से ज्योतिष सीखी और उन सिद्धांतों को सिन्दहिंद नाम से अरबी भाषा में अनुवाद किया ।अकबर के शासनकाल में रहीम की अगुवाई में दार्शनिक एवं धार्मिक संवाद को विशेष प्रोत्साहन मिला। अकबर ने स्थानीय मतावलंबियों कसे सामंजस्य स्थापित करने के लिए एक स्वतंत्र अनुवाद विभाग खोला था ।इसी वातावरण में अनेक संस्कृत ग्रन्थों का फारसी में अनुवाद हुआ। ज्योतिषशास्त्रीय ग्रन्थ लीलावती का भी फारसी भाषा में अनुवाद हुआ। 'अनधरे साहिली' नाम से पंचतन्त्र का फारसी अनुवाद अबुल फज्ल द्वारा किया गया । महाभारत का फारसी अनुवाद ''रज़्मनामा'' तथा रामायण का अनुवाद तर्जुमा-ए-रामायण व अन्य ग्रन्थों का अनुवाद इसी समन्वयवादी नीति का परिणाम था।रहीम इस सांस्कृतिक आन्दोलन के प्रमुख प्रतिनिधि माने जा सकते हैं। उन्होंने न केवल हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि ज्योतिषशास्त्र में भी सांस्कृतिक समन्वय का अभिनव प्रयोग किया। आर्यभट के ग्रंथों का अनुवाद कर 'अर्जबहर' नाम दे दिया गया ।उनका खेटकौतुकम् ग्रन्थ यह प्रमाणित करता है कि मुगलकालीन भारत में ज्ञान का आदान-प्रदान धार्मिक सीमाओं से परे था।

रहीम का ज्योतिष-दर्शन

रहीम कवि ज्योतिष को भविष्य-कथन का साधन तो मानतेही हैं , साथ हे साथ वे इस ज्योतिर्विद्या को मानव जीवन के नियमन एवं सामाजिक संरचना से भी सम्बद्ध मानते हैं।उनके ग्रन्थ 'खेटकौतुकम् ' में ग्रहों की विवेचना बौद्धिकता ,चिंतन-शक्ति,स्वास्थ्य , राजसत्ता , सामाजिक प्रतिष्ठा, धन , विद्या एवं नैतिक आचरण के दृष्टिकोण से की गई

है। इससे स्पष्ट होता है कि खानखाना ज्योतिषशास्त्र को जीवनोपयोगी विज्ञान के रूप में ग्रहण करते थे।रहीमकी दृष्टि में ज्योतिष-विज्ञान एक सार्वभौमिक ज्ञानराशि है, जो किसी एक धर्म या समुदाय तक सीमित न होकर सार्वभौमिक और सार्वकालिक महत्ता से युक्त है -

"फार्सीयपदैर्युक्ता ग्रन्थाः खलु पण्डितैः कृताः पूर्वैः।
सम्प्राप्य तत्पदपथं करवाणि तु खेटकौतुकं पद्यैः।।"

समकालीन सन्दर्भ में रहीम की प्रासंगिकता

वर्तमान समय में जबकि वैश्विक पटल पर सांस्कृतिक असहिष्णुता,पूर्वाग्रह और पहचान-आधारित संघर्ष बढ़ रहे हैं, तब रहीम की सार्वकालिक महत्व की समन्वयवादी दृष्टि अत्यन्त प्रासंगिक हो उठती है।खेटकौतुकम् ग्रन्थ की शैली हमें यह शिक्षा देती है कि ज्ञान का विकास पारस्परिक संवाद और समन्वय से होता है, न कि अलगाव की मानसिकता से।रहीम भारतीय वैविध्यपूर्ण संस्कृति के प्रतीक-पुरुष हैं। अपने काव्य-कौशल और मेधाशक्ति से उन्होंने यह सिद्ध किया कि संस्कृत और फारसी, हिन्दू और मुस्लिम, भारतीय और ताजिक ये सभी परम्पराएँ परस्पर पूरक हो सकती हैं और इनमें समन्वयवादी दृष्टिकोण स्थापित करना भी सम्भव है ।

आज के सन्दर्भ में "साझी संस्कृति" की अवधारणा को पुनर्स्थापित करने की दिशा में रहीम के साहित्य और दार्शनिक सिद्धांतों का का अध्ययन अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना भारतीय ज्ञानपरम्परा के ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने साहित्य, संस्कृति एवं ज्योतिष तीनों क्षेत्रों में समन्वयवादी चेतना का परिचय दिया। उनका ग्रन्थ खेटकौतुकम् भारतीय साझी संस्कृति का प्रामाणिक दस्तावेज है।इस ग्रन्थ में संस्कृत एवं फारसी परम्पराओं का जो समन्वय मिलता है, वह भारतीय संस्कृति की बहुलतावादी आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है। रहीम ने यह सिद्ध किया कि ज्ञान की कोई सांप्रदायिक सीमा नहीं होती।ज्योतिषशास्त्र के माध्यम से उन्होंने सांस्कृतिक संवाद, भाषिक समन्वय तथा बौद्धिक सहअस्तित्व की जो परम्परा विकसित की, वह आज भी प्रेरणास्त्रोत है।अतः यह कहा जा सकता है कि रहीम केवल हिन्दी के नीति-कवि परम्परा के अग्रदूत व्यक्तित्व नहीं, अपितु "ज्योतिषशास्त्र की साझी संस्कृति के वास्तविक रहनुमा"भी थे।

संदर्भ

[1] *ऋग्वेद ; 10/191/2*

[1] *शास्त्री,नेमिचन्द,भारतीय ज्योतिष, पृष्ठ-361*

[1] ताजिक नीलकण्ठी ;संज्ञातन्त्र1/1

[1] सिंह ,समर बहादुर,अब्दुर्रहीम खानखाना,पृष्ठ-236

[1] खेटकौतुकम् ; 2

[1] सिंह ,समर बहादुर,अब्दुर्रहीम खानखाना,पृष्ठ-8

[1] द खेटकौतुकम्,व्याख्या-नारायण दास,भूमिका ,पृष्ठ-8

[1] तैत्तिरीय संहिता भाष्य भूमिका, सायणाचार्यकृत।

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो अथ परा यया[1] तदक्षरमधिगम्यते।'- मुण्डकोपनिषद् ; 1.1

[1] नारदसंहिता ; 1/2-3

[1] बृहत् संहिता; सांवत्सरसूत्राध्याय, श्लोक 32

[1] तजिकनीलकण्ठी;संज्ञा तन्त्रम् 2/15-16

[1] रमलनवरङ्गम् प्रथमरङ्गम्,श्लोक-32

[1] खानखानाचरित;रूद्रकवि

[1] तिवारी,सुरेन्द्रनाथ,रहीम-कवितावली,पृष्ठ-4

[1] खेटकौतुकम् ; श्लोक-13

[1] "आयुखाने चश्मखोरा मालखाने मुश्तरी। धर्मखाने चन्द्रमर्दन् बादशाही बर्तरी।_वही;122

[1] वही;123

[1] वही;121

[1] रहीम, रहीम दोहावली,संपादक-वाग्देव,प्रभात प्रकाशन,दिल्ली,2026,पृष्ठ-54

[1]खेटकौतुकम् ; 103

[1] वही;123

[1] वही;61

[1] वही.17

[1] वही;82

[1] डब्ल्यू.डब्ल्यू. हंटर ; इंडियन गजेटियर-इंडिया,पृष्ठ 218

[1] चौबे,झारखंडे ,और श्रीवास्तव,कन्हैयालाल,मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति,उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान,लखनऊ,2015,पृष्ठ,545

[1] वही।

[1] वेबर;इंडियन लिटरेचर ,पृष्ठ 255

[1] खेटकौतुकम् ; 55

[1] वही;56

[1] वही;100

[1] '...मालदारोऽथ खूबः'_वही;109

[1] वही ; श्लोक-2